44

उपसंहार

अब इस आत्मकथा को विराम देने का समय आ गया है। अंत मे मैं विशेष कुछ न कहकर यही कहना चाहता हूँ कि मेरा गीत—

कृपा का कैसे मोल चुकाऊँ!
मस्तक काट चढ़ा दूँ किर भी उऋण नहीं हो पाऊँ

पूर्णतः मेरी भावना को व्यक्त करता है।

मैने प्रारम्भ में भगवान से दो बातों की याचना की थी। पहली तो यह कि मेरे चारों पुत्र अपने-अपने उद्योगों में एक दूसरे से स्वतन्त्र रहें ताकि उनमें टकराव का अवसर न आये क्योंकि उसका कुफल मैं अपने परिवार के आर्थिक विघटन के रूप में देख चुका था। दूसरी याचना थी कि मुझे जीवन में आर्थिक रूप से कभी किसीका भी आश्रित न होना पड़े।

भगवान ने मेरी दोनो प्रार्थनाएँ सुन लीं। जैसा कि इस आत्मकथा से भी स्पष्ट होगा, मेरा यह विश्वास है कि यदि आप अपनी ओर से पूरी चेष्टा करके सच्चे और निष्कपट हृदय से उस परम सत्ता से कोई प्रार्थना करते हैं तो वह अवश्य उसे सुनती है। यद्यपि पूर्व जन्म के बुरे कर्मों का फल भी, जिसे दैव कहा जाता है, भोगना ही होता है, परन्तु सच्चे मन से किया हुआ पश्चाताप और प्रायश्चित उनके परिणामों की तीव्रता अवश्य कम कर देते हैं।

अंत में अपने इन्हीं शब्दों से मैं यह वक्तव्य समाप्त करता हूँ—

मन रे, विश्वास कर, प्रतीक्षा कर, वहन कर
अनुक्षन अनुचिंतन कर, अनुभव कर, ग्रहण कर
गहन तम-भाल से उठेगी भ्रम-दहन शिखा
आस्था रख, आस्था रख, सहन कर, सहन कर